पैशन इन प्रोफेशन : व्यवसाय में जुनून

एक प्रसिद्ध कहावत है :

Allow your Passion to become your purpose one day it will become your Profession.

अर्थात् अपने जुनून को इतना बढ़ाओ कि वह तुम्हारा उद्देश्य बन जाए और फिर ये उद्देश्य एक दिन तुम्हारा व्यवसाय बन जाए।

ये जुनून कोई ड्रीम जॉब पाना नहीं और न ही ये कि कितनी सैलरी मिलेगी? तुम्हारा पैशन तो ये हो कि तुम्हारी जिंदगी को एक दिशा मिल जाए। हम अक्सर यही सोच लेते हैं कि जिस फील्ड में शिक्षा प्राप्त की है जॉब या नौकरी भी उसी फील्ड में होगी, चाहे वह क्षेत्र उसकी पसंद का नहीं भी हो।

80 अथवा 90 प्रतिशत लोगों के केस में ये बात सच हो सकती है पर मैंने अपने आस-पास ऐसे कई उदाहरण देखे, जहां शिक्षा का विषय तो कुछ और था और आजीविका का क्षेत्र कुछ और बना।

कई ऐसे उदाहरण देखे, जिन्होंने अपने अच्छे-भले पेशे को छोड़कर IAS फील्ड चुना और सफल भी हुए। ऐसा क्यों होता है? कोई तो कारण होता होगा? ज्योतिष के दृष्टिकोण से कहें, तो कोई तो ग्रह स्थिति ऐसी बनती होगी, जब कोई व्यक्ति अपनी इच्छा को ही शक्ति बनाकर सम्भावित खतरों की ओर विघ्नों की परवाह नहीं करके एक अनजान फील्ड में कूद पड़ता है। यही **इच्छाशक्ति ही जुनून** है। ऐसा जुनून ऐसी भावना जहां व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ अपने सपनों को अथवा यूं कहें कि अपने मिशन को पूरा करने में लग जाता है और इसी मिशन को जब पूरे मनोयोग से पूरा करने की चाह जगती है, तब कार्यक्षेत्र बोझ नहीं लगता। तब ये आनन्द का स्रोत बन जाता है और यही आनन्द व्यक्तित्व का फिर ऐसा विकास करता है कि व्यक्ति न केवल आसमान की ऊँचाई छूता है बल्कि इतिहास भी रचता है।

कुलविन्दर भाटिया

> जब कोई व्यक्ति अपनी इच्छा को ही शक्ति बनाकर सम्भावित खतरों की ओर विघ्नों की परवाह नहीं करके एक अनजान फील्ड में कूद पड़ता है। यही इच्छाशक्ति ही जुनून है। ऐसा जुनून ऐसी भावना जहां व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ अपने सपनों को अथवा यूं कहें कि अपने मिशन को पूरा करने में लग जाता है और इसी मिशन को जब पूरे मनोयोग से पूरा करने की चाह जगती है, तब कार्यक्षेत्र बोझ नहीं लगता।

ऐसे बहुत से उदाहरणों में सबसे पहले जिसका नाम जेहन में आया है वो है सुहास गोपीनाथ। एक ऐसा युवक जिसने बचपन से ही अपने शौक को अपना जुनून बना लिया। Web Design का शौक था रात-दिन मेहनत की ओर सिर्फ 33 वर्ष की उम्र में ही कम्पनी खड़ी कर दी और सबसे छोटे CEO बनने का रिकॉर्ड अपने नाम किया।

सभी सफल और इतिहास रचने वाले व्यक्तियों में कुछ बातें कॉमन हैं और वे हैं :

1. काम के प्रति उनका जबरदस्त लगाव।
2. और उसी लगाव के साथ जीना।

मुश्किल समय में भी हौंसला नहीं हारना क्योंकि लगाव हो, तो फिर थकावट अथवा रुकावट नहीं होती। होता है, तो सिर्फ जुनून। अब हम बात करेंगे उन ग्रह स्तिथियों की जो व्यक्तियों को ऐसा जुनून देती है।

1. लग्न और लग्नेश का मजबूत होना उन्नत मस्तिष्क को बताता है।
2. तृतीय भाव रुचि का भाव है।

3. पंचम भाव रुचि को व्यवहारिक रूप देने वाला भाव/ग्रहों में देखें, तो सबसे पहला नाम आता है मंगल का। मंगल ऊर्जा और जुनून का कारक ग्रह है। दूसरे स्थान पर ग्रह आता है बुध। बुध व्यक्ति को सोचने में चीजों की पहचान कराने में और विचार व्यक्त करने में मदद करता है। इसे आंदोलनों में अथवा जुनून में प्राण डालने वाला ग्रह भी कहते हैं। तीसरे स्थान पर ग्रह आता है सूर्य। कुण्डली में सूर्य की शुभ स्थिति वक्ति को विशिष्ट व्यक्तित्व देने में मदद करती है। सूर्य आत्मबोध के साथ ज्ञान, प्रतिष्ठा का भी कारक ग्रह है। जीवन की प्राप्तियों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

मंगल, बुध, सूर्य नैसर्गिक कुण्डली के लग्नेश, तृतीयेश और पंचमेश भी होते हैं। इसके बाद आता है चंद्रमा। चन्द्रमा हमारा अवचेतन मन है। चंद्रमा की मजबूत स्थिति हमारे व्यवहार को नियंत्रित करती है। सभी सफल व्यक्ति अपनी भावनाओं को नियंत्रित ही रखते हैं। इस तरह मन, बुद्धि, व्यवहार सभी जब व्यवस्थित हों, तब व्यक्ति अपने कर्मक्षेत्र में जुनून की हद तक जुड़ जाता है। इसे हम दो उदाहरण कुण्डलियों से देखते हैं :

पहला नाम है जगत् प्रसिद्ध केपी ज्योतिष के संस्थापक के.एस. कृष्णमूर्ति का। ज्योतिष के क्षेत्र में ये

ध्रुवतारा बनकर चमके। इनके नाम से ही ज्योतिष फलित की अद्भुत पद्धति के.पी. पद्धति है। इनका जन्म 1 नवंबर, 1908 को 12:11 बजे थिरुबयारू (तमिलनाडु) में हुआ। इनका मकर लग्न है और लग्न में ही मन कारक चंद्रमा स्थित है। लग्न के स्वमी शनि हैं, जो पराक्रम भाव अर्थात् शरद हाउस में स्थित है। इन शनि की पंचम, नवम भाव पर दृष्टि है। वहीं नवम भाव से जूनून देने वाले ग्रह मंगल की दृष्टि है। मंगल शनि की इस स्थिति एवं दृष्टि ने जातक को धैर्य, हिम्मत दी। उनकी रुचि जोकि ज्योतिष थी। उसको जुनून दिया। आप देखेंगे कि पंचमेश शुक्र भी नवम भाव से शनि से दृष्टि सम्बन्ध बना रहे हैं। शुक्र का बुध से राशि परिवर्तन भी एक सुंदर राजयोग बना रहा है।

सूर्य भी दशम भाव में है और बुध से युति में है

ज्ञान कारक गुरु गूढ़ विद्या के भाव अष्टम में है। इन ग्रह स्थितियों से जातक को भाग्य का साथ भी मिला। साथ ही, चंद्रमा की लग्न में स्थिति ने भावनात्मक स्थिरता भी दी। विचारों को संयमित करना भी सिखाया। अष्टमेश सूर्य की दशम में स्थिति से जातक ने लगी लगाई सरकारी नौकरी छोड़ी और अपने पैशन ज्योतिष को अपना जीवन उद्देश्य बना लिया। जातक ने मन, वचन, कर्म से अपने जीवन को ज्योतिष के नए सूत्र खोजने में लगा दिया और बाद में यही उनकी आजीविका के साथ प्रतिष्ठा का कारण बने और वह एक ऐसा नाम बने जो युगों-युगों तक अमर रहेगा।

दूसरा उदाहरण महेन्द्र सिंह धोनी का है। महेन्द्र सिंह धोनी का जन्म 7 जुलाई, 1981 को 11:15 बजे रांची में हुआ। धोनी किसी परिचय के मोहताज नहीं। क्रिकेट खेल जगत् में इनके नाम का डंका बजता है। इनका कन्या लग्न है और लग्नेश स्वग्रही होकर लग्न में ही स्थित है। साथ ही, कर्मकारक शनि, गुरु और चंद्रमा भी लग्न में ही है। यानि जातक मन, कर्म, धर्म सभी तरह से अपने पैशन को समर्पित है। तृतीय भाव पर शनि और मंगल की दृष्टि है। इन्हीं ग्रह स्थितियों से जातक धीर, गम्भीर हौंसले वाला और योजनाबद्ध तरीके से काम करने वाला बना।

नवमेश शुक्र की एकादश भाव से पंचम पर दृष्टि है और पंचमेश शनि लग्न में लग्नेश के साथ सप्तम एवं दशम भाव को भी प्रभावित कर रहे हैं। मंगल तृतीयेश होकर दृष्टि से अपने भाव को मजबूती दे रहा है। इस स्थिति ने जातक को कभी हार नहीं मानने वाला बनाया। प्रथम, पंचम, नवम, दशम एवं एकादश भावों की मजबूती ने जातक के व्यक्तित्व को एक अलग-सी आभा दी। लग्नेश, तृतीयेश की मजबूती ने जातक को खेलकूद में अग्रणी बनाया। क्रिकेट में इन्होंने जो नाम कमाया किसी से छुपा नहीं है। इस तरह कई उदाहरण हैं जब व्यक्ति ने अपनी खुशी को इतना जुनून दिया कि फिर वही व्यवसाय बन गया और सफलता ने इतिहास रचा।

आज के युवा आइकॉन संदीप माहेश्वरी का नाम किसी से छुपा नहीं है। सामान्य परिवार में जन्में संदीप ने पारिवारिक व्यवसाय को आजीविका नहीं बनाकर अपने पैशन फोटोग्राफी को ही व्यवसाय बनाया और सफलता की ऊंचाइयों को छुआ। आज एक प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर हैं, हजारों युवा भी। लगाते हैं उन्हें सुनने को अंत में सिर्फ इतना ही कि हौंसला है, जुनून है, तो फिर कुछ भी मुश्किल नहीं। दृढ़ निश्चय हो, तो फिर सारा ब्रह्माण्ड ही हमारे साथ हो लेगा।

अष्टम भाव एवं अष्टमेश के विशिष्ट फल

प्रायः ज्योतिष में अष्टम भाव को अशुभ भाव के रूप में परिभाषित किया गया है। किसी ग्रह का सम्बन्ध अष्टम भाव से हो, तो उसके कुफल ही कहे गए हैं, पर अक्सर ऐसा नहीं होता।

आचार्य गुरमीत

जितने भी सफल व्यक्ति हुए हैं, उनमें से अनेक व्यक्तियों की जन्मपत्रिका में अष्टमेश का सम्बन्ध पंचम अथवा लग्न भाव से रहा है। ऐसे योग वाले व्यक्तियों के पास किसी न किसी प्रकार की कला अवश्य होती है, जो इन्हें ईश्वर से उपहारस्वरूप प्राप्त होती है। पंचमेश और अष्टमेश का आपसी सम्बन्ध होने पर आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बनते हैं। ऐसे योग में व्यक्ति शेयर मार्केट, सट्टेबाजी, लॉटरी द्वारा धन प्राप्त करता है।

अष्टम भाव से विचारणीय विषय

1. आयु निर्णय।
2. मृत्यु का कारण।
3. दुर्गम स्थान में निवास।
4. संकट।
5. मन की पीड़ा।
6. मृत्यु का कष्टपूर्वक होना।
7. लम्बी यात्राएं।
8. गढ़े खजाने की प्राप्ति।
9. विदेश में जाकर नौकरी करना।
10. पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्ति।
11. पूर्वार्जित धन का नष्ट होना।
12. अचानक धन प्राप्ति।
13. मानसिक क्लेश।
14. लावारिस संपत्ति प्राप्त होना।
15. गुप्त विद्या एवं पारम्परिक विद्याओं में निपुणता।

जन्मपत्रिका में अष्टम भाव को मृत्यु का भाव कहा जाता है। मृत्यु का भाव होने के साथ ही ये भाव गूढ़ विद्या तथा अकस्मात धन प्राप्ति का भाव भी कहलाता है। अष्टम भाव का त्रिकोण भाव से सम्बन्ध उत्तम होता है। अष्टम भाव का लग्न अथवा पंचम भाव से सम्बन्ध होने पर व्यक्ति गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता, पारंपरिक विद्याओं को जानने वाला तथा किसी विशेष कला में पारंगत होता है। अष्टमेश का सम्बन्ध लग्न से होने पर व्यक्ति को पूर्वजों की सम्पत्ति का सुख मिलता है। अष्टमेश का द्वादशेश के साथ सम्बन्ध बनते हुए यदि पंचमेश अथवा पंचम भाव से युति करे, तो विदेश अथवा घर से दूर रहकर विद्याध्ययन करता है तथा धनार्जन भी घर से दूर रहकर करता है। ऐसे व्यक्ति का मस्तिष्क बहुत ही कुशाग्र होता है। वह प्रत्येक तथ्य को बारीकी के साथ सोचता और समझता है। वह ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करता है तथा किसी भी प्रकार की समस्या में पड़ने पर भी धैर्य को नहीं छोड़ता।

अष्टमेश का सम्बन्ध नवम से बहुत ही उत्तम होता है। ऐसे व्यक्ति दर्शन विषय के विशेष ज्ञाता होते हैं। कई बड़े दार्शनिक एवं सन्यासियों की जन्मपत्रिका में ऐसे योग देखे जा सकते हैं। ऐसे योग व्यक्ति की पूर्वानुमान क्षमता बहुत सुदृढ़ होती है। प्रत्येक काम को करते हुए उसके दूरगामी प्रभाव का बहुत ध्यान रखता है।

अष्टम भाव अथवा अष्टमेश का सम्बन्ध धन एवं कर्म भाव से होने पर ये व्यक्ति की शीघ्र उन्नति को दर्शाता है। ये उन्नति किसी भी प्रकार के हथकण्डों को अपनाकर की हुई होती है। जो व्यक्ति अपने जीवन में गलत राह को चुनकर शीघ्र उन्नति को प्राप्त करते हैं, उनकी जन्मपत्रिका में ये योग देखे जा सकते हैं। ऐसे योग में व्यक्ति अपनी कुशाग्र बुद्धि से स्वार्थ के वशीभूत होकर येन-केन-प्रकरेण सफलता को शीघ्र प्राप्त कर लेते हैं। अष्टम भाव का सम्बन्ध लाभ भाव से हो, तो आकस्मिक लाभ को दर्शाता है, मगर स्वास्थ्य के लिए ये योग अच्छा नहीं होता। पूर्वजों से धन प्राप्ति का योग बनता है। हालांकि स्वास्थ्य की दृष्टि से अष्टमेश का प्रबल होना अच्छा नहीं माना जाता, परन्तु अष्टमेश का प्रबल होकर त्रिकोण से सम्बन्ध बनाना मनुष्य को रहस्यमयी बनाता है। ये भाव मनुष्य की उन्नति के अतिरिक्त उसके जीवन में आने वाले मानसिक, आर्थिक एवं शारीरिक दुःखों को भी दर्शाता है।

सारांश रूप से यही कहा जा सकता है कि ये अष्टम भाव बहुत ही विचित्र भाव है, जो अपने गर्भ में अनेक फलों को समेटकर रखता है। अतः फलादेश में अष्टम भाव के महत्त्व को कदापि नहीं नकारना चाहिए।